वो आदमी जो घर की देखभाल करने वाला था

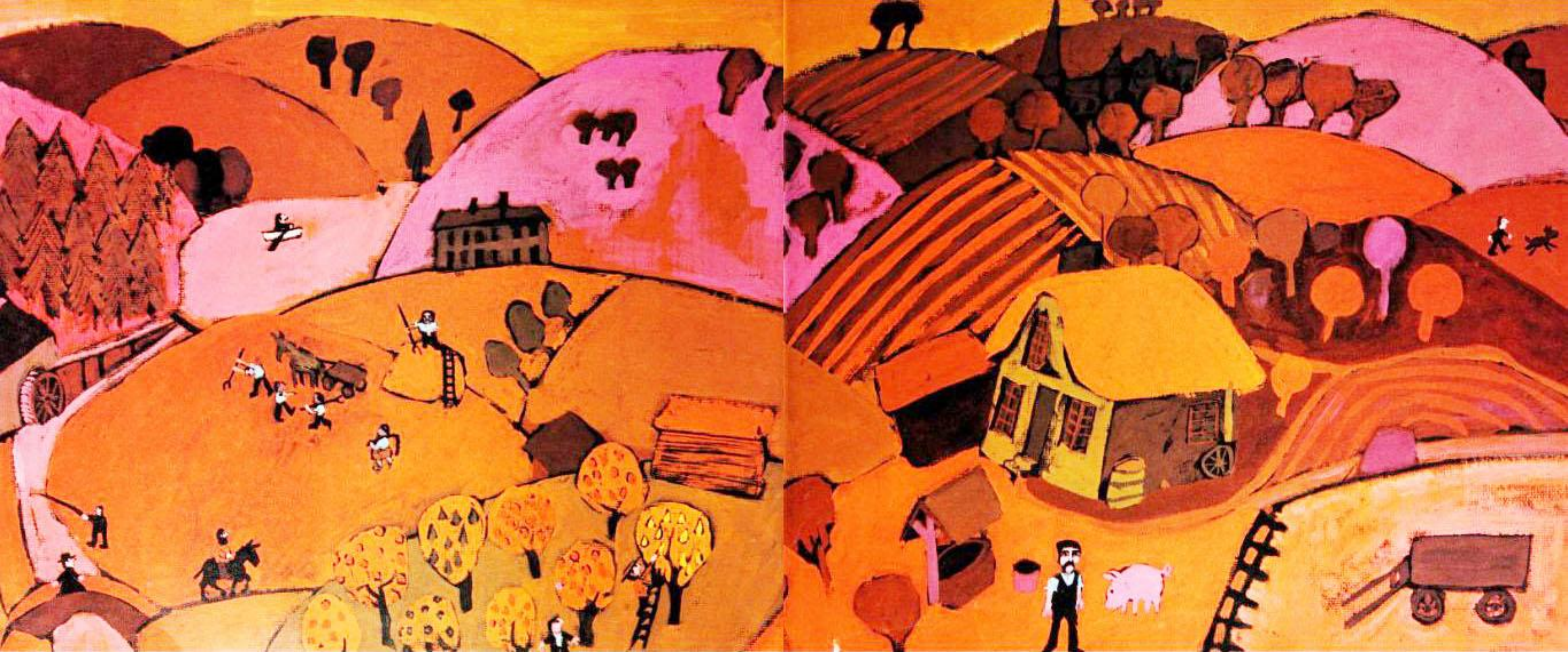

वो आदमी जो घर की
देखभाल करने वाला था

उल्रिक बहुत ही बुरे स्वभाव का आदमी था. अपनी पत्नी और शिशु के साथ एक छोटी पहाड़ी के निकट अपने छोटे से घर में वह रहता था. हालांकि उसकी पत्नी दिनभर घर में काम करती थी, खाना बनाती थी, कपड़े धोती थी, झाड़ू लगाती थी, बर्तन मांजती थी, फिर भी उल्रिक कभी संतुष्ट न होता था. घर लौट कर वह हमेशा शिकायत करता था, पाँव पटकता और पत्नी पर खूब चिल्लाता था.

सारा दिन घास काट कर एक शाम जब वह घर लौटा तो वह कुछ अधिक ही चिढ़चिढ़ा हो रखा था. घर के भीतर आते ही वह चिल्लाने लगा, “आज मुझे कितनी मेहनत करनी पड़ी! मेरी कमर भी दर्द कर रही है! मैं सारा दिन धूप में काम करता रहा हूँ और तुम यहाँ बैठ कर आराम कर रही हो. अगर तुम पुरुष होती तो तुम्हें पता चलता कि मेहनत करना क्या होता है!”

उसकी पत्नी उसकी शिकायतों से तंग आ चुकी थी. अचानक एक विचार उसके मन में आया. “इतना गुस्सा करने की कोई आवश्यकता नहीं है,” पत्नी ने कहा. “हम अपनी जगह बदल लेते हैं. तुम्हारी जगह मैं खेतों में काम करूँगी और तुम घर में रहकर बच्चे की देखभाल करना.”

“कितना अच्छा विचार है,” उल्रिक खुशी से बोला. “थोड़ा आराम करना मेरे लिए अच्छा होगा.”

और इस तरह, अगली सुबह, उसकी पत्नी लंबे डग भरती हुई खेत की ओर चल दी और उल्रिक घर में ही रह गया. उसने अपना नाश्ता खत्म किया और आराम से बैठ कर बच्चे को देखने लगा जो किचन के फर्श पर खेल रहा था. वह प्रसन्नता से सोच रहा था कि सारा दिन वह आलस्य में बिताएगा.

आखिरकार वह उठा और सोचने लगा कि घर का क्या-क्या काम उसे करना था. उसने तय किया कि पहले वह क्रीम से मक्खन निकालेगा. लेकिन क्रीम बिलौते हुए उसे गर्मी लगने लगी. उसे लगा कि इस काम में बहुत प्यास लग जाती थी. वह सीधा नीचे तहखाने में बीयर के पीपे के पास गया. लेकिन जैसे ही उसने बीयर के पीपे का नल खोला, उसे किचन में सूअर के बुदबुदाने की आवाज़ सुनाई दी.

“सूअर मक्खन को गिरा देगा,” उसने सोचा. सीढ़ियों पर भागता हुआ वह झटपट किचन की ओर गया. उसे बहुत देर हो गई थी! सूअर ने बर्तन उलट दिया था और ज़मीन पर फैली क्रीम चाट रहा था.

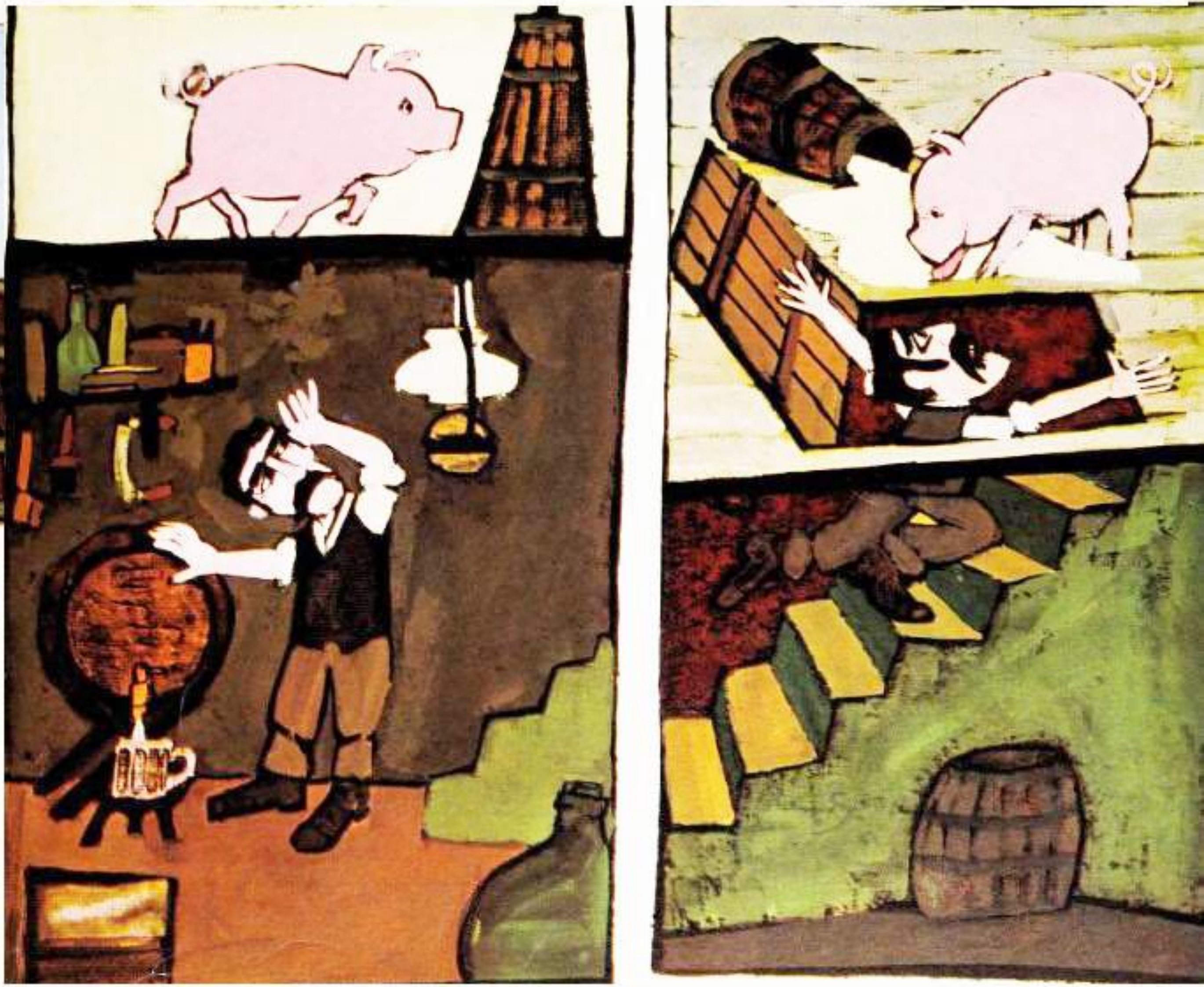

क्रोध में उल्रिक ने सूअर को लात मार कर घर से बाहर निकाला. पर उसने इतनी ज़ोर से लात मारी थी कि सूअर नीचे लुढ़क गया और बेहोश हो गया.

अचानक उसे बीयर का ध्यान आया. उसने पीपे का नल खुला छोड़ दिया था. वह नीचे भागा, लेकिन उसे फिर देर हो गई थी. फर्श पर बीयर बह रही थी और उससे भी बुरी बात यह थी कि पीपा खाली हो गया था. अब प्यास बुझाने के लिए उसके पास बीयर भी न थी.

भारी कदमों से वह धीरे-धीरे चलते हुए ऊपर किचन में आया और मक्खन बनाने के लिए रसोई-भंडार से बची हुई क्रीम ले आया. वह फिर से क्रीम को जल्दी-जल्दी मथने लगा क्योंकि भोजन का समय लगभग हो चुका था और खेत में पत्नी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी.

एकाएक दोनों हाथ उसने सिर पर दे मारे. वह गाय को तो भूल गया था. उसे मैदान में ले जाने के बजाय गाय को उसने गोशाला में ही छोड़ दिया था और खाने या पीने के लिए उसे कुछ न दिया था.

उल्रिक की त्योरी चढ़ गई. मैदान गोशाला से बहुत दूर था और गाय को चरागाह तक ले जाने के लिए वह शिशु को अकेला न छोड़ना चाहता था.

अचानक उसे एक युक्ति सुझाई दी. उसने घर की छत पर लगी घास की ओर देखा. गाय छत पर लगी घास ही क्यों न खाये? घर पहाड़ी की ढलान पर बना था, पहाड़ी से छत तक एक तख्ता रख कर गाय को वह छत तक ले जा सकता था.

वह गाय की ओर भाग कर जाने ही वाला था कि उसने मक्खन के बर्तन को देखा. “बच्चा कहीं इस बर्तन को न उलट दे,” उसने सोचा. उसने एक आह भरी और बर्तन को अपनी पीठ पर बाँध लिया और गोशाला की तरफ दौड़ा.

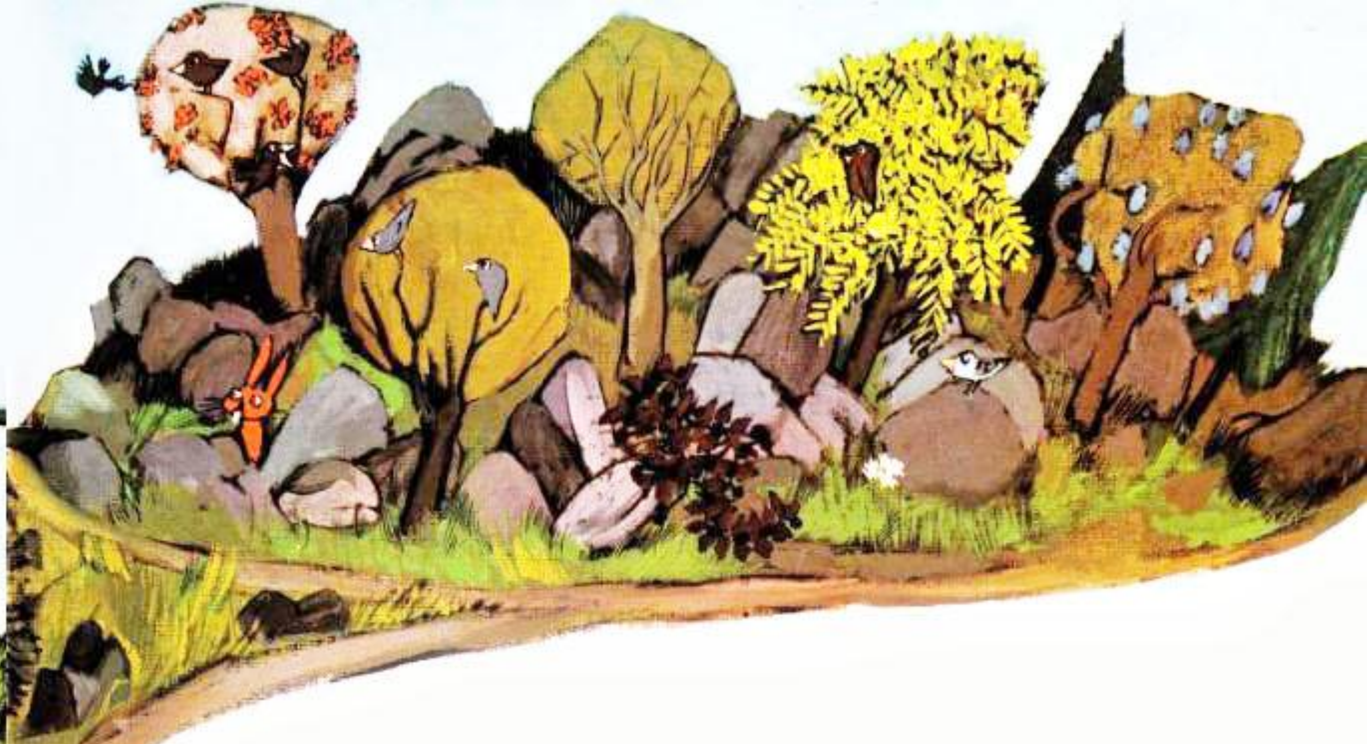

गोशाला में देर तक बंद रहने के कारण गाय परेशान हो गई थी. वह बेसब्री से उसके पीछे-पीछे पहाड़ी पर चल दी और तख्ता पार कर के घर की छत पर आ गई. जैसे ही वह घास चरने लगी, उल्रिक ज़ोर से कराह दिया. गाय ने अबतक पानी न पिया था. उसे तुरंत कुएं से पानी लाना होगा.

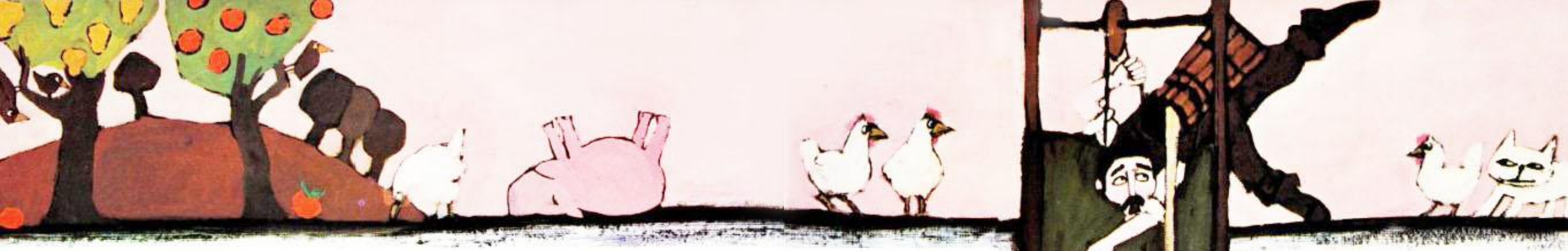

वह छत से चल दिया, तख्ता पार किया, पहाड़ी से नीचे आया और झटपट अहाते में गया. जैसे ही कुएं से बाल्टी खींचने के लिए वह झुका तो बर्तन से निकल कर क्रीम, उसके सिर से बहती हुई उसकी गर्दन पर आई और नीचे कुएं में गिर गई. उल्रिक ने फिर से आह भरी. अब वह मक्खन न बना सकता था क्योंकि भंडार में और क्रीम न थी.

लेकिन उन्हें कुछ तो खाना ही था और इसलिए वह किचन की ओर भागा और झटपट बर्तन में पानी डाल कर उसे आग पर रख दिया. भोजन में उन्हें खिचड़ी ही खानी पड़ेगी.

तभी उसे छत पर गाय के चलने की आवाज़ सुनायी दी. "कहीं वह छत से गिर कर अपनी टाँग न तोड़ ले!" उसने चिंतित होकर सोचा. एक रस्सा लिए, दौड़ता हुआ वह घर से बाहर आया, पहाड़ी पर चढ़ा, तख्ता पार किया और फिर से छत पर आ गया.

जल्दी-जल्दी उसने रस्से का एक सिरा गाय की गर्दन में बाँध दिया और दूसरा सिरा चिमनी से नीचे लटका दिया. फिर तख्ता पार कर वह झटपट पहाड़ी से नीचे आया और दौड़ता हुआ घर के अंदर आया. जैसे ही वह आग के पास से निकला, उसने बर्तन में खोलते हुए पानी में कुछ मुट्ठी दाल-चावल डाल दिये और बुरी तरह हाँफते हुए उसने चिमनी से लटकते हुए रस्से का सिरा पकड़ लिया और उसे कस कर अपनी एक टाँग के साथ बाँध लिया.

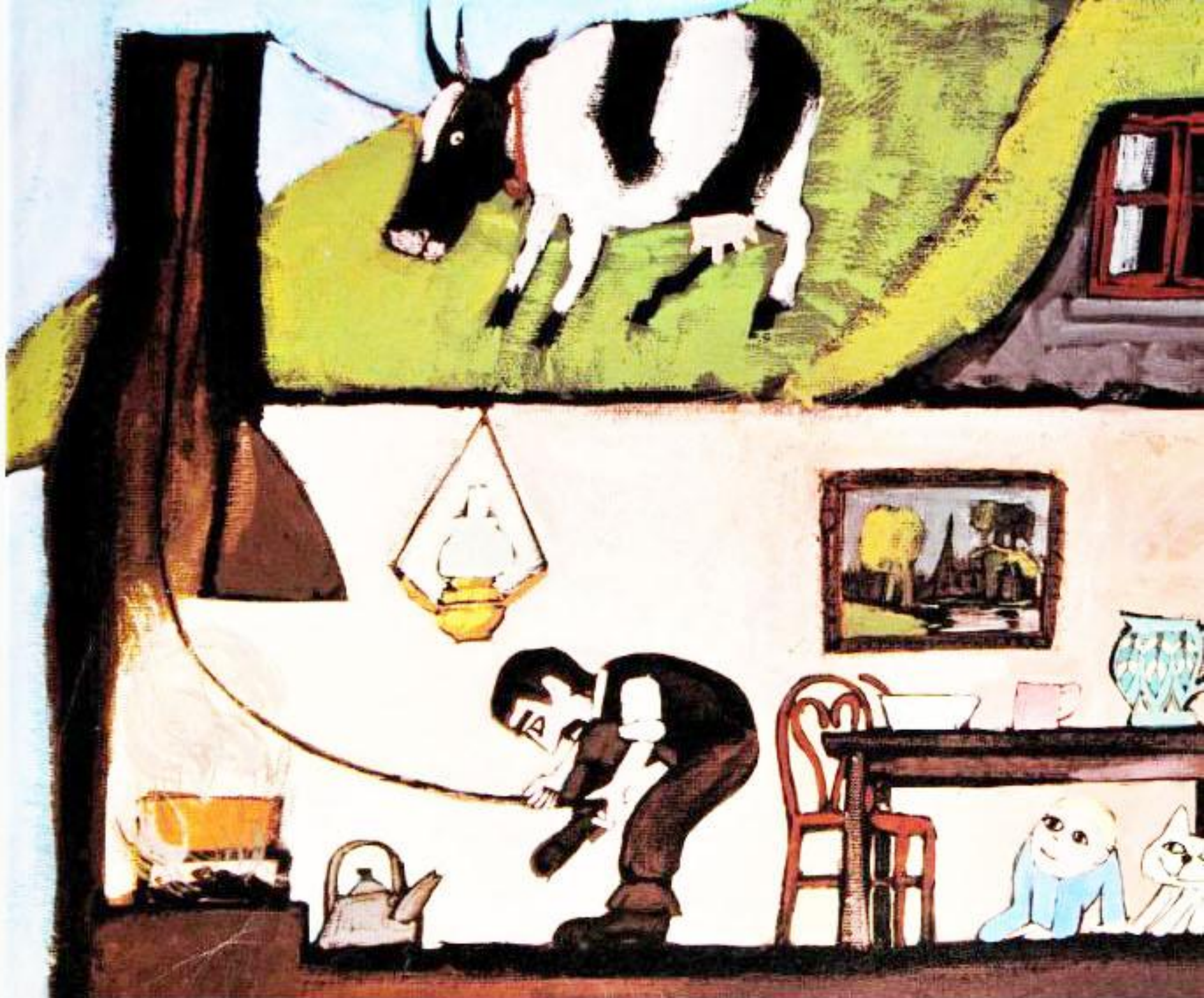

जैसे ही उसने चूल्हे पर रखी खिचड़ी को हिलाया उसने छत के ऊपर एक अजीब आवाज़ सुनी!

फिर एक धमाके की आवाज़ सुनाई दी. गाय छत से नीचे गिर गई थी!

टाँग से खिंचता हुआ उल्रिक चिमनी में जा फँसा-और वहाँ अटक गया!

छत से गिर कर गाय भी फंस गई थी. उन में से कोई भी न ऊपर जा सकता था न नीचे!

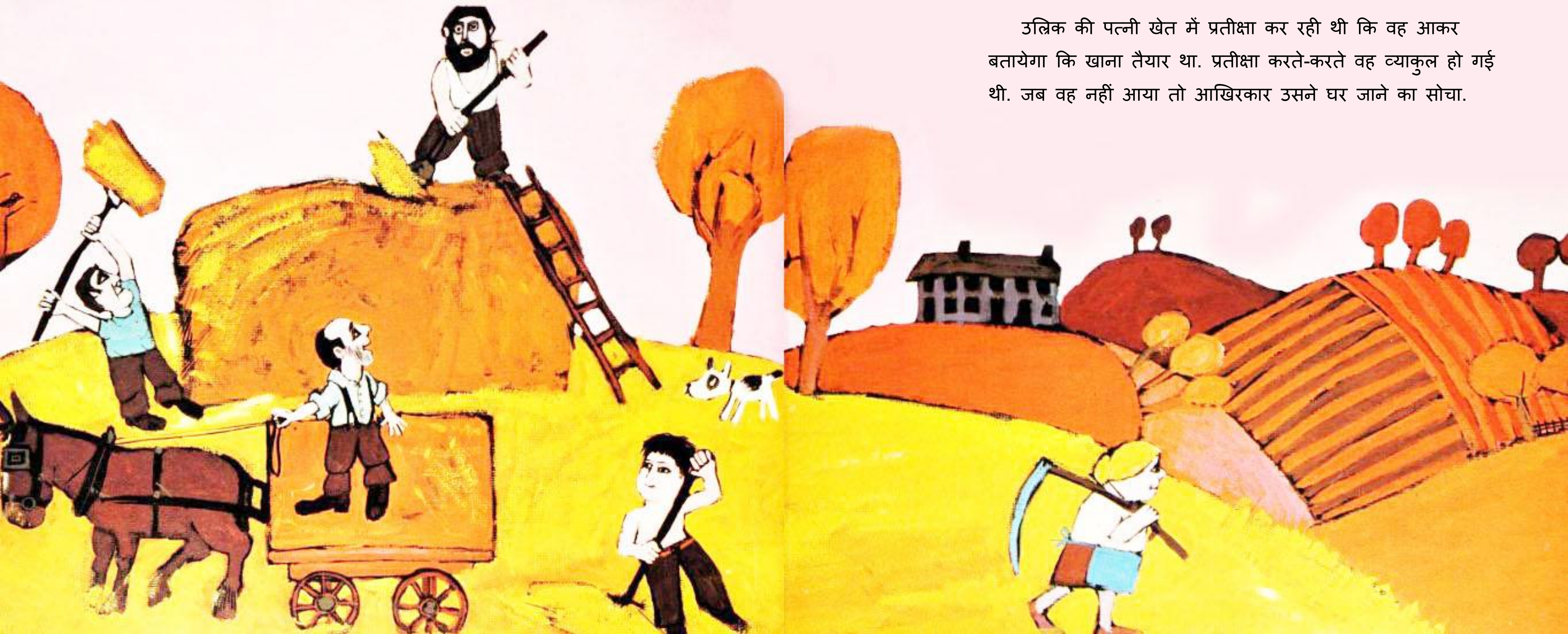

उल्रिक की पत्नी खेत में प्रतीक्षा कर रही थी कि वह आकर बतायेगा कि खाना तैयार था. प्रतीक्षा करते-करते वह व्याकुल हो गई थी. जब वह नहीं आया तो आखिरकार उसने घर जाने का सोचा.

जैसे ही वह मोड़ पर घूमी, उसकी आँखें खुली की खुली रह गईं. रस्से से बँधी गाय छत से लटक रही थी और बेचारी दयनीय ढंग से चिल्ला रही थी. अपने हँसिये के एक प्रहार से उसने रस्सा काट डाला. इधर गाय नीचे ज़मीन पर आ गिरी, उधर उल्रिक चिमनी से नीचे आ गिरा.

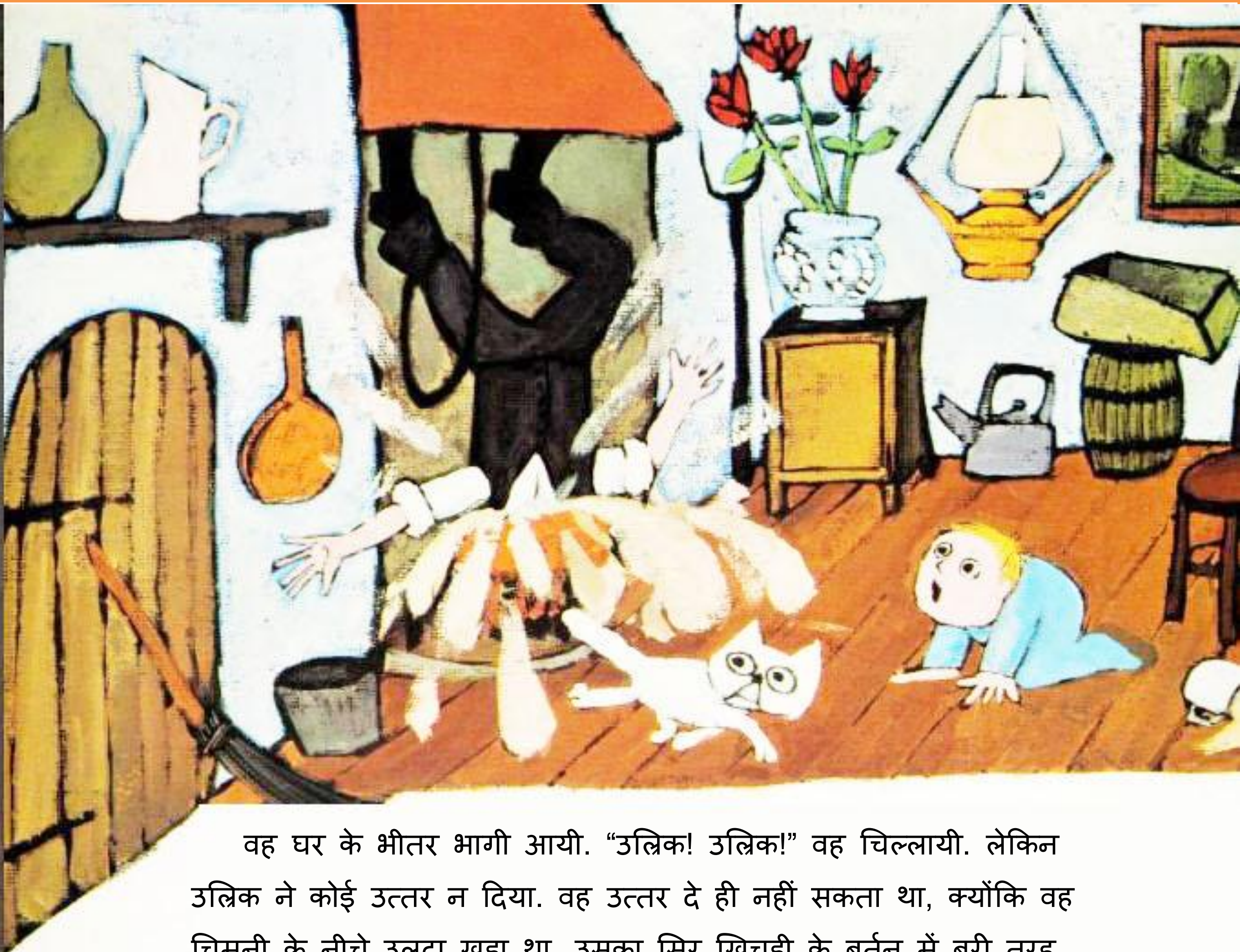

वह घर के भीतर भागी आयी. "उल्रिक! उल्रिक!" वह चिल्लायी. लेकिन उल्रिक ने कोई उत्तर न दिया. वह उत्तर दे ही नहीं सकता था, क्योंकि वह चिमनी के नीचे उलटा खड़ा था, उसका सिर खिचड़ी के बर्तन में बुरी तरह फंसा हुआ था.

समाप्त